ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–X, Issues– IV July - August 2021

मूल्यों की स्थापना एवं पुनर्गठन में संचार माध्यमों की भूमिका

रीनू सिंह,

शोध छात्रा, मा.गाँ.चि.ग्रा. विश्वविद्यालय, सतना (म.प्र.)

आचार्य (डॉ.) नन्द लाल मिश्र,

अधिष्ठाता, कला संकाय, मा.गाँ.चि.ग्रा. विश्वविद्यालय, सतना (म.प्र.)

सारांश

हमारे देश में अनेक बच्चे शिक्षा के दायरे से बाहर हैं तथा उनकी शिक्षा के लिए खुले विद्यालय, विश्वविद्यालय एवं मुक्त विश्वविद्यालय आदि संस्थान स्थापित किए गए हैं। यहां तककि शिक्षा की पहुंच बढ़ाने के लिए देश में समाचार पत्र, पत्रिकाएं, कार्टून, रेडियो, टीवी, वीडियो, कम्प्यूटर, सीडी, इन्टरनेट, ई-लर्निंग, मोबाइल लर्निंग, मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स और सोशल मीडिया जैसे प्लेटफॉर्म एवं साधनों के प्रयोग पर जोर दिया जा रहा है। लेकिन विभिन्न संचार माध्यमों का मूल्य विकास के दृष्टि से समुचित प्रयोग शिक्षा संगठनों में नहीं किया जा रहा है | जबकि समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र तथा सोश्ल मीडिया अगर समुचित प्रयोग शिक्षा संस्थानों में शिक्षण अधिगम के लिए किया जाए तो ये सभी संचार माध्यम मूल्यों की स्थापना एवं पुनर्गठन में सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं

मुख्य शब्दः *मूल्य, संचार माध्यम, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र, सोश्ल मीडिया*

CC BY

Aarhat Publication & Aarhat Journals *is licensed Based on a work at* ***http://www.aarhat.com/amierj/***

प्रस्तावना

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया विद्यार्थियों में पूर्णरूपेण मूल्यों की स्थापना करने में अक्षम ही साबित हो रही है, जिसके विभिन्न कारक हैं। भावी नागरिकों में मूल्यों की स्थापना का दायित्व मात्र शिक्षण-संस्थाओं एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का ही नहीं है, वरन् भावी नागरिक जिस समाज में अपना जीवन यापन करते हैं, उस समाज की विभिन्न परिस्थितियां, उस समाज का सामाजिक ढांचे का स्वरूप, उस समाज की परम्परायें, रीतियां, कुरीतियां, संस्कृति, उस समाज के संचार माध्यमों सहित विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संगठन भी भावी नागरिकों के व्यक्तित्व में मूल्यों की स्थापना के लिये उत्तरदायी होते हैं। यदि किसी समाज की विभिन्न परिस्थितियां व परिवेश सहित उपरोक्त वर्णित कारक किसी भावी नागरिक के जीवन में मूल्यों की स्थापना में सहायक नहीं है, तो ऐसी स्थिति में इस बात की सम्भावना भी कम हो जाती है कि मात्र विद्यालयी संगठन व शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से अमुक नागरिक के जीवन में मूल्यों की स्थापना हो पाना सम्भव होगा।

किसी भी समाज द्वारा अपने भावी नागरिकों को मूल्यों से विहीन शिक्षा प्रदान करना उसकी जड़ें खोखली करने के समान ही है। औपचारिक रूप से मूल्यों की स्थापना का कार्य और जिम्मा शिक्षण संस्थानों के उपर ही है, किन्तु इसके अतिरिक्त भी मूल्यों की स्थापना में विभिन्न जन संचार साधनों एवं औपचारिक-अनौपचारिक संस्थाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

वर्तमान में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के विकास के कारण संचार के नए नए अवसर उपलब्ध हुए हैं। कम्प्यूटर, इन्टरनेट और वर्ल्ड वाइड वेब और वेब 2.0 व 3.0 टेक्नोलॉजी के विकास के साथ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का खूब विकास हुआ। वर्तमान में इन्हीं तकनीकियों के विकास के कारण सोशल मीडिया भी बहुत मुखर संचार साधन के रुप में उभर कर सामने आया है। सोशल मीडिया वर्तमान में जीवन के सभी पक्षों को बहुत प्रभावित कर रहा है।

सामान्य रुप से बच्चों और वयस्कों के मनोरंजन के लिए निर्मित अनेक कार्यक्रमों में कुछ ऐसी परिस्थितियां उपलब्ध होती हैं जिनसे मूल्य संकट प्रतिबिम्बित होते हैं तथा कुछ मूल्य उभरते भी हैं। इन संचार के साधनों में व्यक्ति को अवैयक्तिक ढ़ंग से शिक्षा भी प्राप्त होती है लेकिन इनके प्रभावी उपयोग का दायित्व विद्यार्थी पर होता है। यदि विद्यार्थी संवदेनशील नहीं है और समाचार पत्र, पत्रिकाएं, कार्टून, रेडियो, टीवी, वीडियो, कम्प्यूटर, सीडी, इन्टरनेट, ई-लर्निंग, मोबाइल लर्निंग, मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स और सोशल मीडिया जैसे प्लेटफॉर्म एवं साधनों के माध्यम से उपलब्ध सामग्री में रुचि लेकर उनका तार्किक विश्लेषण नहीं करता है व इन साधनों का प्रयोग मात्र औपचारिक शिक्षा अथवा मनोरंजन प्राप्त करने के लिए करता है तो उसके मूल्यों का विकास अप्रभावित ही रहेगा। यह भी सम्भव है कि बिना सोचे समझे या उत्सुकतावश विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रमों के चरित्रों के व्यवहारों का अन्धानुकरण करने से उसके मूल्यों का ह्रास हो सकता है। लेकिन अत्याधुनिक संचार साधनों का समुचित प्रयोग बच्चों की शिक्षा में किया जाए या समुचित कार्यक्रमों या सामग्री तक विद्यार्थियों की पहुंच रखी जाए तो मूल्यों की स्थापना और पुनर्गठन में ये संचार साधन सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं। इसके साथ ही विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संगठन भी मूल्यों के विकास, स्थापना और उनके पुनर्गठन में महती भूमिका निभा सकते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

दसारी, राजेन्द्र प्रसाद (2017) ने "वैल्यू सिस्टम एन्ड वैल्यू प्रीफ्रेन्सेज ऑफ प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स ऑफ सेकेन्डरी स्कूल्स्: एन इन्डियन सर्वे" अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य भावी शिक्षकों की मूल्य व्यवस्था और मूल्य प्राथमिकताओं का परीक्षण करना था। प्रतिदर्श के रुप में 330 सेवा पूर्व बी.एड. का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे शिक्षकों को यादृच्छिक रुप से चयनित किया गया तथा आंकड़े एकत्र करने के लिए Rokeach Value Survey (RVS) का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि भावी शिक्षक अपने प्रशिक्षण की अन्तिम अवस्था के लिए स्वतन्त्रता, आराम और मित्रता के प्रति झुकाव है। इसके साथ ही उनके आचरण के ढ़ंग से स्पष्ट होता है कि वे कर्तव्य चेतना और मस्तिष्क के खुलेपन के साथ कठिन परिश्रम की प्रकृति के प्रति सजग हैं। अध्ययन के परिणामों के अनुसार शोधकर्ता यह सुझाव देता है कि शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और अनुदेशन व्यवस्था द्वारा सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक कार्यों में आवश्यक रुप से कुछ ऐसी गतिविधियां शामिल की जाएं, जिससे भावी शिक्षक समानता, शान्ति, आत्म सम्मान और ईमानदारी के

मूल्यों को आत्मसात कर सकें।

वी. विजय लक्ष्मी एवं एम. मिल्काहपॉल (2018) के लेख वैल्यू एज्यूकेशन इन एज्यूकेशनल इन्स्टीटयूट्स एन्ड रोल ऑफ टीचर्स इन प्रमोटिंग द कॉन्सेप्ट का उद्देश्य मूल्य शिक्षा की आवश्यकता, लक्ष्य एवं उद्देश्यों का बोध करना, मूल्य शिक्षा से सम्बन्धित नीतियों की समीक्षा करना तथा मूल्य शिक्षा में टीचर्स की भूमिका का अध्ययन करना था। अध्ययन से अनुसंधानकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम् का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन अधिकांश शिक्षक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और अभिवृद्धि की ओर बहुत कम महत्व देते हैं। मूल्यों के प्रति उपेक्षा हमारे समाज के स्वास्थ्य के लिए नुकसान दायक साबित होगी। इसलिए मूल्यों के विकास के प्रति शैक्षिक संस्थाओं को सहायता प्रदान करनी होगी। मूल्य शिक्षण से ज्यादा ग्रहण किए जाते हैं, इसलिए विद्यार्थियों का सम्पर्क ऐसे वातावरण से होना चाहिए जिससे उनमें सहअनुभूति, साझेदारी, तार्किकता, आध्यमिकता, तकनीकी दक्षता और सम्प्रेषण क्षमता आदि का समुचित विकास हो सके और वे प्रत्येक स्तर पर इन मूल्यों को आत्मसात कर सकें।

शोध आलेख का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य मूल्यों की स्थापना एवं पुनर्गठन में संचार माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करना था | क्योंकि विभिन्न सम्प्रेषण माध्यमों से विद्यार्थी अलग अलग प्रकार की विषय वस्तु से अवगत हो सकते हैं और सम्बन्धित विषय वस्तु विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास को प्रभावित कर सकती है | इसलिए विभिन्न प्रचलित संचार माध्यमों का प्रयोग करके मूल्यों की स्थापना एवं पुनर्गठन कैसे किया जा सकता है ? यह समझने के लिए यह शोध पत्र लिखा गया है|

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति दार्शनिक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित है जो कि वैदिक एवं वर्तमान के मध्य सामंजस्य को लेकर आगे बढ़ती है | प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ती ने मुख्यत: वर्णात्मक एवं तुलनात्मक शोध विधि का चयन किया है | चूंकि प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति दार्शनिक है और सूचनाओं की प्रकृति भी गुणात्मक है अतः उक्त अध्ययन के लिए यही शोध विधि सर्वोत्तम है |

शोध साहित्य स्रोत

प्रस्तुत शोध की प्रकृति दार्शनिक होने के कारण इसके अंतर्गत सनातन दर्शन, साहित्य,वेद, उपनिषद, मीमांसा, पुराण एवं वर्तमान विद्यालयीन पाठ्य सामग्री में मूल्यों की उपस्थिति विश्लेषण अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप किया गया ताकि वांछित परिणाम प्राप्त किये जा सकें और तदुनुसार अनुशंसाएं प्रस्तुत की जा सकें| क्योंकि साहित्यिक ग्रन्थों में वर्णित मूल्य सम्बन्धी विचारों, आचरणों एवं वर्तमान में प्रचलित जीवन पद्धति को विश्लेषण किए बिना अध्ययन को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता |

मूल्यों की स्थापना एवं पुनर्गठन में संचार माध्यमों की भूमिका

कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षक व विद्यार्थी आमने-सामने होते हैं तथा परस्पर अन्तरक्रिया के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों की अधिगम

कठिनाइयां शीघ्र दूर हो सकती हैं। बच्चों व व्यस्कों के मनोरंजन के लिये निर्मित अनेक कार्यक्रमों में कुछ ऐसे स्थल होते है, जिनमें मूल्य संकट प्रतिबिम्बित होते हैं तथा मूल्य उभरते हैं। इन जनसंचार साधनों में व्यक्ति को अवैयक्ति ढंग से शिक्षा प्रदान की जाती है। इनके प्रभावी उपयोग का दायित्व विद्यार्थी पर होता है तथा वह ही इस प्रकार के माध्यमों पर व्यापक नियन्त्रण रखता है। यदि विद्यार्थी संवेदनशील नहीं हैं, समचार-पत्र, पत्रिकाओं, कार्टून चित्रों व कथनों, दूरदर्शन कार्यक्रमों, रेडियो प्रसारणों, लोक-कथाओं, फिल्मों, वीडियो, ऑडियो-कैसिट, सीडी, डीवीडी, सोशल मीडिया आदि जनसंचार माध्यमों में प्रदर्शित मूल्य दर्शाने वाली परिस्थितियों में रुचि लेकर उन पर विचार नहीं करता है व इन माध्यमों का प्रयोग मात्र औपचारिक शिक्षा अथवा मनोरंजन प्राप्त करने के लिये करता है तो उसके मूल्यों का विकास अप्रभावित ही रहेगा। यह भी सम्भव है कि बिना सोचे-समझे या उत्सुकतावश फिल्मों व दूरदर्शन कार्यक्रमों के अभिनेताओं के व्यवहारों, सोशल मीडिया की विभिन्न सामग्रियों का अनुकरण मूल्य ह्रास को अधिक बढ़ावा दे। इस अध्याय में मूल्यों की शिक्षा में विभिन्न जनसंचार माध्यमों की प्रभावी भूमिका पर विचार करने का प्रयास किया गया।

समाचार पत्रों की भूमिका

मूल्यों की स्थापना एवं पुनर्गठन में मुद्रित सामग्री के रुप में समाचार पत्रों का बहुत महत्व प्रारम्भ से ही रहा है। आजादी की लड़ाई में भी त्याग और बलिदान को प्रेरित करने के लिए स्वतन्तत्रा संग्राम सेनानियों ने समाचार पत्रों का प्रकाशन किया और देश की जनता में आजादी और त्याग के मूल्यों को भरने में इन समाचार पत्रों ने भरपूर भमिका निभाई। सिर्फ त्याग और बलिदान ही नहीं समाज के परम्परागत मूल्यों जैसे संस्कृति का संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं उनका सदुपयोग, सहयोग एवं सामुदायिक सदभावना, चरित्र, ईमानदारी, निष्ठा एवं आपसी प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना और पुनर्गठन में भी समाचार पत्रों ने सदैव से महती भूमिका निभाई है। समय समय पर विभिन्न मूल्यों से सम्बन्धित लेखों के प्रकाशन के द्वारा समाज के बच्चों और लोगों को अपने मूल्यों की स्थापना और उनके संरक्षण के लिए प्रेरित किया जाता रहा है और समाचार पत्र बहुत हद तक वर्तमान में भी यह भूमिका सकारात्मक रुप से निभा रहे हैं। हालांकि बाजारीकरण के दौर में विभिन्न समाचार पत्र संगठन आर्थिक रुप से कई बार मूल्यों की स्थापना को हाशिए पर छोड़ रहे हैं लेकिन फिर भी मूल्यों के संवर्धन में समाचार पत्रों की प्रमुख भूमिका है। डॉ. इन्दर राज वैद अधीर ने पत्रकारिता को मूल्यों से सम्बन्ध करते हुए लिखा कि 'जनहित को आदर्श मानना पत्रकारिता है, भय, लालच, संकोच त्यागना पत्रकारिता है |

रेडियो प्रसारणों की भूमिका

आजकल आकाशवाणी के कार्यक्रम शहरी क्षेत्रों में सामान्यत: बहुत कम सुने जाते हैं| ग्रामीण क्षेत्रों में ये अभी भी प्रचलन में हैं| हालांकि आकाशवाणी विशेषज्ञों के निर्देशन में तैयार किये गये कार्यक्रमों के प्रसारण द्वारा विद्यार्थियों की भाषा, योग्यताओं, भाषण, आदतों, भाव-प्रकाशन शैली व सृजनात्मकता को विकसित करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। इनसे सहयोग, परोपकार, राष्ट्रीयता, आनन्द, नैतिकता, ईमानदारी, सत्यता, अहिंसा, सेवा-भाव, दया, स्वच्छता, विश्वबन्धुत्व, साहस, दृढ़ निश्चय, विनम्रता, श्रम में निष्ठा, त्याग, सादगी, फिजूलखर्ची न करना, स्वावलम्बन, दान, सहिष्णुता, धैर्य, प्रेम, कर्तव्यपरायणता, क्षमा, दूसरों का आदर, मित्रता, निर्भीकता, अनुशासन, दृढ़ निश्चय, पर्यावरण संरक्षण, भक्ति आदि अनेक मूल्यों को विकसित करने हेतु प्रभावी प्रयत्न किये जा रहे हैं।

श्रवण के चार स्तर होते हैं -

1. चित्त वृत्ति श्रवण,
2. बोधात्मक श्रवण,
3. अस्थाई महत्व की बातों का श्रवण
4. व्याख्यात्मक व आलोचनात्मक श्रवण।

अन्तिम चौथा स्तर सबसे उंची श्रेणी का है तथा इसमें श्रोता ध्यानपूर्वक तथा गहनता से कार्यक्रम सुनकर समस्या का मूल्यांकन करके समाधान बताता है। रेडियो प्रसारण तब सफल हो पाते हैं जब सुनने वाले श्रवण के तीसरे व चैथे स्तर पर रेडियो या एफएम कार्यक्रमों को सुनते हैं। ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण एक अत्यन्त कठिन कार्य है।

रेडियो, ट्रांजिस्टर व एफएम सर्वाधिक सुलभ व सस्ते उपकरण हैं। चुनाव प्रसार, देश की आन्तरिक व बाहरी खतरों से रक्षा, पेट्रोल संकट, अन्न संकट, साम्प्रदायिक उन्माद, अन्धविश्वासों के निराकरण, महिलाओं व समाज के सुविधाहीन लोगों के प्रति कुत्सित व हीन भावनाओं के नियन्त्रण व परिवर्तन आदि में रेडियो प्रसारणें ने एक सशक्त प्रसार माध्यम की भूमिका अदा की है। आज भी विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थी व व्यस्क समान रुचि विचार-बिन्दु, नाटक, बालसंघ, हमारा पर्यावरण, गृहलक्ष्मी, युगवाणी, विद्यार्थियों के लिये, प्रकाश स्तम्भ, पंचायत-घर, गाँधी चर्चा, साक्षात्कार व भ्रमण आदि पर आधारित कार्यक्रम, ज्ञान-विज्ञान आदि रेडियो प्रसारण सुनते हैं। इनमें मूल्यों के विकास की अनन्त सम्भावनायें मौजूद होती हैं, परन्तु इनका अधिकाधिक लाभ नहीं उठाया जा रहा है। इस स्थिति के लिये मुख्य रूप से निम्न परिस्थितियां दोषी हैं-

1. शिक्षा संस्थाओं में उपलब्ध रेडियो सेटों का निष्क्रिय या खराब होना।
2. समय-सारणी से रेडियो प्रसारण सुनने तथा उन पर चर्चा करने हेतु निश्चित समय की व्यवस्था न होना।
3. विद्यार्थियों की आयु, उनकी सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि, रुचियों, पूर्व ज्ञान, धार्मिक व सांस्कृतिक मान्यताओं व आवश्यकताओं से भिन्नता होना।
4. रेडियो प्रसारणों का श्रवण व उपयोग करने के प्रति शिक्षकों व विद्यार्थियों में उपयुक्त अभिवृत्तियों व प्रेरणा का न होना।
5. प्रसारण पूर्व कार्यक्रमों की स्क्रिप्ट/पाण्डुलिपि आदि का न मिल पाना।
6. प्रसारण समय की अनुपयुक्तता व
7. प्रसारण की निश्चितता आदि

हमारे शिक्षक मूल्यों की शिक्षा की दृष्टि से उपयोगी विभिन्न रेडियो प्रसारणों को टेप कर सकते हैं तथा समय-समय पर उन्हें पूर्णतः या अंशतः प्रयोग कर मूल्यों के प्रसारण सुनने के लिये अवसर देने के साथ-साथ शिक्षक विद्यार्थियों को मूल्य विश्लेषण चार्ट, मूल्य सूचना चार्ट, मुद्रित मूल्य स्पष्टीकरण प्रश्न व अन्य आवश्यक अनुदेशन सामग्री व सूचनायें उपलब्ध करा सकते हैं।

दूरदर्शन (टेलीविजन) की भूमिका

21वीं शताब्दी में तकनीकी के विकास के साथ साथ दूरदर्शन व टेलीविजन के प्रसारण में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए, जिसके फलस्वरूप टेलीविजन का स्वरूप बिल्कुल बदल गया, विभिन्न नवीन चैनलों का प्रसारण सम्भव हुआ, जिससे कि विभिन्न श्रेणियों के कार्यक्रमों को देखने के लिये विभिन्न चैनलों के विकल्प समाज के सामने खुले। आध्यात्मिक, पर्यावरण, खेलकूद, समाचार, संगीत, मनोरंजन जैसी विभिन्न श्रेणियों से सम्बन्धित सैकड़ों चैनल आज टेलीविजन की दुनिया में स्थापित होकर लोगों को मनोरंजन देने का कार्य कर रहे हैं। इन चैनलों पर प्रसारित हो रहे विभिन्न कार्यक्रम समाज के लोगों के मध्य विभिन्न प्रकार के मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। दूरदर्शन/टेलीविजन इतिहास की घटनाओं को समझाने में सफल रहा है। यह सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है, क्योंकि इसमें ध्वनि व चलचित्रों का मेल रहता है तथा बाहरी विश्व को आसानी से कक्षा में लाया जा सकता है। ज्ञान प्रदान करने व निपुणतायें दिखाने के साथ-साथ दूरदर्शन कार्यक्रमों द्वारा रुचियों व मूल्यों को भी उभारा जा सकता है। विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं व अनुभवों को दूरदर्शन कार्यक्रमों की सहायता से आसानी से विस्तृत किया जा सकता है। इन सम्भावनाओं के होते हुए भी इस माध्यम की निम्न सीमायें मूल्यों की शिक्षा में दूरदर्शन/टेलीविजन की भूमिका को सीमित कर रही हैः-

1. इससे एकतरफा संचार होता है। दर्शक अपनी जिज्ञासायें शान्त करने के लिये सामान्य तौर पर प्रश्न नहीं पूंछ पाते हैं। हालांकि अब धीरे-धीरे इस प्रकार के प्लेटफार्म विकसित किये जा रहे हैं, जहाँ हम सम्बन्धित कार्यक्रम के विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु दूरभाष पर सम्पर्क कर सकते हैं, लेकिन व्यवहार में ऐसा किया जाना सम्भव नहीं हो पाता है।
2. दर्शक को प्रस्तुतीकरण की गति के साथ-साथ चिन्तन करना व समझना भी होता है। वह न तो कार्यक्रम को पुनः देख पाता है और न पीछे कर सकता है या रोक सकता है। हालांकि अब एचडी सेट टॉप बॉक्स जो रिकार्डिंग फीचर्स के साथ आ रहे हैं, वे इस प्रकार की सुविधा उपलब्ध भी करा रहे हैं, लेकिन सामान्य तौर पर ऐसा कम ही हो पाता है।
3. कार्यक्रम श्रोताओं व दर्शकों की बहुत बड़ी संख्या को ध्यान में रखकर बनाये जाते हैं। वे कुछ विद्यार्थियों के अरुचिकर, काल्पनिक व विरोध उत्पन्न करने वाले अनुभवों से सम्बन्धित भी हो सकते हैं।
4. माता-पिता व शिक्षकों को पहले से दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की विषय-वस्तु व उन विशिष्ट स्थलों की जानकारी नहीं होती है, जिनमें मूल्य आधारित व्यवहार या मूल्य-संकट प्रदर्शित होते हों।

शिक्षक विभिन्न उपयोगी कार्यक्रमों के वीडियो कैसिट या रिकॉर्डिंग कर सकते हैं तथा प्रसारण के बाद में सुविधानुसार उनको पुनः देखने व समझने का अवसर अपने विद्यार्थियों को प्रदान कर सकते हैं। शिक्षक विभिन्न कार्यक्रमों, उनमें प्रदर्शित मूल्य संकट की परिस्थितियों, विभिन्न निर्णय विकल्पों व उनके औचित्य, निर्णयों के परिणामों आदि पर चर्चा कर मूल्यों के विकास में दूरदर्शन की भूमिका को महत्वपूर्ण बना सकते हैं।

दूरदर्शन/टेलीविजन कार्यक्रमों में बच्चों के जीवन से जुड़ी यथार्थ परक परिस्थितियों का प्रस्तुतीकरण होना चाहिये, उनमें प्रस्तुत की जाने वाली सामग्री के विषय, उनकी कोटि, उनके प्रस्तुतीकरण के ढंग आदि को उद्देश्य केन्द्रित बनाने के लिये दूरदर्शन कार्यक्रम

संचालकों व प्रबन्धकों को विशेष ध्यान देना चाहिये तथा टेलीविजन के माध्यम से ऐसे कार्यक्रमों का प्रसारण नहीं होना चाहिये, जिनमें सभ्य, धर्म-निरपेक्ष, शोषण मुक्त व सहनशील समाज के मूल्य प्रतिमानों के आभ्यंतरीकरण में बाधा पहुंचती हो। प्रसारण से पूर्व कार्यक्रमों की पर्याप्त छानबीन होनी चाहिये तथा इस मूल्यांकन को करने का दायित्व एक विशेषज्ञों की समिति को सौंपना चाहिये। इस समिति में दार्शनिक, मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अनुसन्धान विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, बाल मनोवैज्ञानिकों, दूरदर्शन, इंजीनियरों तथा विषय व संगीत विशेषज्ञों को शामिल करना चाहिये। मूल्यों की शिक्षा हेतु उपयोगी कार्यक्रमों को बनाते समय ही उनके प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करने हेतु शिक्षक संदर्शिकायें भी निर्मित की जानी चाहिये। पंचायत, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, छात्रावास और विद्यालयों में टी.वी. सैट उपलब्ध कराये जाने का उत्तरदायित्व सरकार का होना चाहिये तथा उपकरणों के रख-रखाव के लिये सरकार को आवर्ती अनुदान भी देना चाहिए। इसके लिए सरकार द्वारा विशेष कोष की भी व्यवस्था की गयी है |

चलचित्र की भूमिका

विद्यार्थी चलचित्र लोक में दिखाई देने वाले पात्रों के अभिनय, वेशभूषा, विचारों, संवादों व मूल्यों से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। विद्यार्थी कुछ अभिनेताओं या अभिनेत्रियों के प्रशंसक बन जाते हैं तथा उनके साथ अपना तादात्मयीकरण कर लेते हैं। जब वे उन्हें मूल्यों पर आधारित व्यवहार करता हुआ देखते व सुनते हैं तो मूल्य आत्मसात व स्वांगीकृत करने की भी कोशिश करते हैं। आजकल अनेक चलचित्रों में मूल्य ह्रास को दिखाया ही नहीं जाता वरन मूल्यों पर आधारित व्यवहार करने वालों के कष्टप्रद, दुःखी व दरिद्र जीवन और मूल्य विमुख अनैतिक आचरण करने वालों के वैभवपूर्ण, प्रतिष्ठापूर्ण व सुखी जीवन की वास्तविकता पर बल दिया जाता है। यह तिरस्कार योग्य है। अच्छे उद्देश्य के लिये ही चलचित्र बनाना चाहिये व साथ में यह भी ध्यान रखना चाहिये कि बुरे पक्षों को उभारने की कोशिश न की जाये। फिल्म निर्माताओं का यह दायित्व है कि कथानक को प्रस्तुत करते समय बुराई के अंश बहुत कम हों तथा उनके घातक परिणामों का भी प्रदर्शन किया जाये। लेकिन वर्तमान में सिनेमा को जीवन के अधिक करीब करके प्रदर्शित करने का प्रयास किया जा रहा है, जिस कारण सिनेमा के प्रदर्शन में निरन्तर मूल्यों को गिराकर दिखाया जा रहा है। ऐसी स्थिति में सिनेमा आमजन के जीवन में मूल्यों की स्थापना करने के बजाय मूल्यों के ह्रास का मुख्य कारण बनकर उभरता जा रहा है।

चलचित्रों का मुख्य केन्द्र बॉलीवुड का एक विशेष समूह जो पूर्ण रूप से अंडरवर्ल्ड के संरक्षण में पश्चिमी विचारधारा को प्रचारित करके देश की सभ्यता और संस्कृति को चलचित्रों के माध्यम से धूमिल करने के लिए सत्तर के दशक से सतत प्रयासरत है | सरकार द्वारा इस पर अंकुश लगाया जाना अति आवश्यक है | क्योंकि इस विचारधारा में केवल भोग महत्वपूर्ण है | राष्ट्रीयता की भावना, त्याग कोई मायने नहीं रखते हैं, वहीं दक्षिण भारतीय चलचित्र सकारात्मकता का भाव व्यक्त करते हैं | भारत सरकार सेंसर बोर्ड को ये अधिकार दे कि वह समस्त चलचित्रों का मूल्यांकन कर केवल उन्हीं चलचित्रों के प्रसारण की अनुमति दे जिनसे समाज में नकारात्मकता के भाव उत्पन्न न हो |

वर्तमान में चलचित्रों का एक और रूप वेबसीरीज के रूप में सामने आ रहा है | जिस पर मुख्यत: अश्लील और मूल्य विहीन सामग्री का प्रसारण किया जा रहा है | जो आने वाले समय में मूल्यह्रास का एक महत्वपूर्ण कारक होगा | शासन का अभी इस पर किसी भी

प्रकार अंकुश नहीं है |

चलचित्र विधा के कुछ नकारात्मक पहलू होते हुए भी सकारात्मक पहलू यह भी है कि परिवार कल्याण कार्यक्रम पर आधारित चलचित्रों का प्रयोग करके छोटे परिवार के मानक को लोकप्रिय बनाने के प्रयत्न किये गये हैं। शौचालय, सैनिटरी नैपकिन जैसे विषयों पर भी सिनेमा सकारात्मक संदेश देने का प्रयास कर रहा है। नागरिकता की शिक्षा, स्वच्छता सम्बन्धी आदतों, स्वास्थय शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों के परिणामों, पर्यावरण, प्रदूषण व संरक्षण, महापुरुषों के जीवन आदि प्रसंगों पर आधारित चलचित्र अतीत में भी मूल्यों के विकास को अनुकूल रूप से प्रभावित करते रहे हैं और वर्तमान में भी कर रहे हैं। यदि शासन नकारात्मक प्रसारणों पर अंकुश लगाए तो इस प्रकार चलचित्र भी मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं| इस बात में आज भी कोई सन्देह नहीं है कि चलचित्रों को जनसंचार साधनों के रूप में प्रयोग कर तीन प्रमुख कार्य किये जा सकते हैं:-

क. अनुदेशनात्मक कार्य- चलचित्रों के माध्यम से सामाजिक व्यवहारों, मूल्यों व विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

ख. अभिप्रेरणात्मक कार्य- चलचित्रों के माध्यम से दर्शकों की अभिवृत्तियों तथा मूल्यों में वांछित परिवर्तन किये जा सकते हैं।

ग. प्रदर्शन कार्य- चलचित्रों के माध्यम से मूल्य स्पष्टीकरण की विभिन्न विधियों तथा मनोचालक कौशलों का प्रदर्शन भी किया जा सकता है|

सोशल मीडिया की भूमिका

कम्पूयटर युग में क्रान्ति लाने का श्रेय मुख्य रूप से इन्टरनेट व्यवस्था को जाता है। लेकिन पिछले दस वर्षों में बेब 2.0 एवं 3.0 के अस्तित्व में आने के बाद से सोशल मीडिया ने समाज में जिस प्रकार की क्रान्ति ला दी है, वह स्वयं में अद्भुत है। पिछले एक दशक में विभिन्न सोशल मीडिया साइटस जिनमें फेसबुक, ट्विटर, यू-ट्यूब, व्हाटसएप व इन्स्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इन सबके अस्तित्व में आने से आधुनिक समाज का स्वरूप एकदम से परिवर्तित हो चुका है। आज की तिथि में सोशल मीडिया ने मानव को उसकी उंगलियों में वह शक्ति प्रदान कर दी है, जिसके द्वारा वह कुछ ही समय में बहुत बड़े जन समूह तक अपनी बात पहुंचा सकता है। जनसंचार के इस क्रान्तिकारी माध्यम ने जहाँ एक ओर समाज के जीवन को सुगमता प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर इस माध्यम के समाज में अस्तित्व में आने के बाद से मानवीय मूल्यों में निरन्तर ह्रास भी देखने को मिला है। राजनीतिज्ञों ने निजी स्वार्थ से प्रेरित होकर सोशल मीडिया पर जिस प्रकार भ्रामक सूचनायें प्रसारित करने का बीड़ा उठाया है, उसने समाज से सामाजिक मूल्यों का ह्रास करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आज शिक्षित व्यक्ति भी सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त किसी भी सामग्री को बिना प्रामाणिकता जांचे सत्य मान लेता हैं और अपने समूह से जुड़े अन्य लोगों को प्रेषित कर देता है, कई बार ये सूचनायें इस प्रकार की होती हैं, जो समाज में विघटन का मुख्य कारण भी बन जाती हैं।

वैचारिक क्षमतायें मजबूत न होने के कारण व सोशल मीडिया पर यथोचित नियंत्रण न होने के कारण सोशल मीडिया समाज को जोड़ने के साथ-साथ ही समाज को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। विभिन्न राजनैतिक दलों ने जबसे अपने आईटी सेल विकसित

किये हैं, सोशल मीडिया पर भ्रामक जानकारियों की भरमार है, जहाँ मूल्यों को ताक पर रखकर विभिन्न अश्लील, हिंसक व भ्रामक जानकारियां स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हैं। जानकारी के अभाव में विभिन्न व्यक्ति इन सूचनाओं को सत्य मान रहे हैं और समाज में निरन्तर विघटनकारी घटनाओं को बढ़ावा देने का कार्य कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर फैली भ्रामक जानकारियों के सन्दर्भ लेकर विद्यार्थी भी अध्ययन से विमुख हो रहे हैं और समय का दुरुपयोग कर रहे हैं। सोशल मीडिया की सबसे बड़ी समस्या इसके प्रयोग पर यथोचित नियन्त्रण न होना भी है। यदि सोशल मीडिया के प्रयोग पर यथोचित नियंत्रण कर लिया जाये तो सोशल मीडिया निश्चित रूप से समाज में मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

परिणाम

वर्तमान शोध अध्ययन से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं -

1. किसी भी समाज में उसके मूल्यों के संवर्धन के लिए उसके नागरिकों सहित सभी अंग जिम्मेदार होते हैं। इस प्रकार विभिन्न संचार माध्यमों समाज में मूल्यों की स्थापना का जो दायित्व है, उसे वे समुचित ढंग से नहीं निभा पा रहे हैं। सामान्यतः वे अपने दायित्वों से विमुख होते हुए दिखते हैं, यह शोध में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है |
2. सिनेमा को समाज का दर्पण कहा जाता है| इसलिए अगर सिनेमा को मूल्य आधारित या सामाजिक सरोकारों के मुद्दों की ओर लाने का प्रयास किया जाए तो निश्चित रुप से सिनेमा मूल्यों की स्थापना में सार्थक भूमिका निभा सकता है।
3. सिनेमा के अतिरिक्त अन्य संचार माध्यम जैसे रेडियो और टीवी भी बाजारीकरण के प्रभाव से अछूते नहीं रहे हैं। इस श्रंखला में सरकारी टीवी चैनल दूरदर्शन अभी भी सरकार के नियन्त्रण और परम्परागत आधार के कारण मूल्यों के संरक्षण एवं उनकी स्थापना के लिए काफी हद तक प्रतिबद्ध दिखाई देता है। क्योंकि उसका मकसद सिर्फ पैसे कमाना नहीं है बल्कि वह सामाजिक सरोकारों के मुद्दों को समाज के सामने लाना ही है।
4. इसके अतिरिक्त निजी क्षेत्र के टीवी चैनलों में टीआरपी की होड़ में बहुत से अनर्गल कार्यक्रम भी दिखाए जा रहे हैं। फिर भी टीवी मूल्यों की स्थापना में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है। लेकिन मूल्यों को सबसे ज्यादा नुकसान इन्टरनेट ने पंहुचाया है। क्योंकि पश्चिमी संस्कृति और नग्नता के सम्पर्क में आने से भारतीय संस्कृति की मूल्यों की विरासत को बहुत बड़ा झटका लगा है। इस प्रकार कह सकते हैं कि अत्याधुनिक संचार माध्यमों से भारतीय मृल्यों को काफी नुकसान हुआ है।
5. इसके साथ ही सोशल मीडिया का जितना सार्थक प्रयोग विचारों के साझा करने और शिक्षा में हो सकता था उतना हुआ नहीं, क्योंकि सोशल मीडिया पर किसी का नियन्त्रण न होने से इस पर अनर्गल विषय वस्तु या सामग्री को पोस्ट करके लोगों का बरगलाने का काम ज्यादा होने लगा है। अगर इस पर सार्थक नियन्त्रण हो सके तो निश्चित रुप से मूल्यों की स्थापना और उनके पुनर्गठन में समुचित भूमिका निभा सकता है।

सन्दर्भ सूची

एन.सी.ई.आर.टी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-2005, नई दिल्ली

कोहलबर्ग, एल. (1969). स्टेज इन द डेवलपमेंट ऑफ़ मोरल थॉट एंड एक्शन, न्यूयार्क, होल्ट, रिनेहार्ट एंड विन्स्टन पृष्ठ संख्या -9

गुड,सी.वी. (1959). डिक्शनरी ऑफ़ एजुकेशन (सेकेण्ड एडिशन), फाई डेल्टा कप्पा, न्यूयार्क

गुप्त, एन. एल. (2000), मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नई दिल्लीः नमन प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-1

गुप्ता, एस. एवं अग्रवाल, जे. सी. (2008). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, नई दिल्लीः शिप्रा प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-11

दसारी, राजेन्द्र प्रसाद (2017). वैल्यू स्स्टिम एन्ड वैल्यू प्रीफ्रेन्सेज ऑफ प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स ऑफ सेकेन्डरी स्कूल्स्ः एन इन्डियन सर्वे। *यूनिवर्सल जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च*, 5(8), 1403-1409।

पान्डेय, रामशकल एवं मिश्र, करुणा शंकर (तिथि अज्ञात). *मूल्य शिक्षण*, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा। पृष्ठ-124

महात्मा गाँधी, नई तालीम योजना, 1937

मिश्र, भास्कर, (2014). मूल्य आधारित शिक्षा, नई दिल्लीः कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृष्ठ संख्या-3 एवं 89-91

रथ, एल ई, हरिमन, एम. साइमन, एस.बी. (1966). वैल्यू एंड टीचिंग, ओहियो, चार्ल्स ई. मेरिल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986

वी. विजय लक्ष्मी एवं एम. मिल्काहपॉल (2018). वैल्यू एज्यूकेशन इन एज्यूकेशनल इन्स्टीटयूट्स एन्ड रोल ऑफ टीचर्स इन प्रमोटिंग द कॉन्सेप्ट, *इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल साइन्स एन्ड रिसर्च*, 8(4), 29-38।

शिक्षा आयोग (1964-66)

सक्सेना, एन. आर. स्वरूप (2013). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठः आर. लाल. बुक डिपो प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-463